अध्याय 25

अब्राहम के अन्तिम दिन और इसहाक का परिवार

कुलपति के कतूरा के द्वारा अन्य वंशज, इसहाक (प्रतिज्ञा का पुत्र) को अपनी विरासत सौंपने और उसकी मृत्यु और गाड़े जाने के विषय में बताने के द्वारा, 25 अध्याय का पहला भाग अब्राहम की कहानी का समापन करता है (12:1-25:18)। हाजिरा के द्वारा अब्राहम के पुत्र इश्माएल की संक्षिप्त वंशावली का वर्णन किया गया है।

अध्याय का दूसरा भाग इसहाक की कहानी से आरम्भ होता है (25:19-28:9)। इसहाक की पत्नी रिबका के कई वर्ष बांझ रहने के बाद परमेश्वर ने उसे जुड़वां पुत्रों से आशीषित किया। दो वंश याकूब (इस्राएल) और एसाव (एदोम) वंश के बीच शत्रुता उसके गर्भ से ही पूर्वाभासित होने लगी। इस अध्याय के अन्त में, याकूब ने छल करके सफलता से अपने भाई एसाव पहलौठे का अधिकार ले लिया।

कतूरा के द्वारा अब्राहम का परिवार और इसहाक का उत्तराधिकार (25:1-6)

[1]तब अब्राहम ने एक और पत्नी ब्याह ली जिसका नाम कतूरा था। [2]और उससे जिम्रान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक, और शूह उत्पन्न हुए। [3]और योक्षान से शबा और ददान उत्पन्न हुए। और ददान के वंश में अश्शूरी, लतूशी, और लुम्मी लोग हुए। [4]और मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीदा, और एल्दा हुए, से सब कतूरा के सन्तान हुए। [5]इसहाक को तो अब्राहम ने अपना सब कुछ दिया। [6]पर अपनी रखेलियों के पुत्रों को, कुछ कुछ दे कर अपने जीते जी अपने पुत्र इसहाक के पास से पूरब देश में भेज दिया।

इसहाक के जन्म के बाद, वृद्ध अब्राहम के और भी बच्चे हुए। उनकी माता के अब्राहम के साथ विवाह का वर्णन अस्पष्ट है। निश्चित रूप से हम इसहाक के विषय में ही जानते हैं, प्रतिज्ञा का पुत्र, अब्राहम का एक मात्र वारिस।

आयत 1. बाइबल अंश स्पष्ट तिथि नहीं बताता जब **अब्राहम ने एक और पत्नी ब्याह ली जिसका नाम कतूरा था**। इसके बजाए लेखक मात्र यही लिखता है

कि उसका विवाह हुआ और इस विवाह से हुए बच्चों की संक्षिप्त सूची देता है। क्योंकि स्थान के विवरण के कारण कुछ लोगों का विश्वास है कि यह विवाह सारा की मृत्यु के बाद ही हुआ (23:1, 2)। क्यांकि सारा की मृत्यु के समय अब्राहम 137 वर्ष का था और कतूरा से उसके 6 बच्चे हुए, कुछ का विचार है कि इस स्त्री से विवाह सारा के जीवन के समकालीन ही था। इन घटनाओं का कालक्रम अस्पष्ट है।

आरम्भ में परमेश्वर के द्वारा आदर्श विवाह एकपत्नीत्व के रूप में स्थापित किया गया थाः एक स्त्री एक पुरुष के लिए (2:18, 21-25)। परन्तु हो सकता है कि परमेश्वर ने उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए बहुपत्नी की अनुमति दे दी हो, कि "बहुत सी जातियों का पिता बने" (17:4, 5)। इस आयत में, कतूरा को उसकी "पत्नी" कहा गया है (25:1); परन्तु बाद के बाइबल अंश में उसका उपपत्नी (रखैल) के रूप में उल्लेख किया गया (25:6; 1 इतिहास 1:32), जो कि याकूब से रखैल बिल्हा और जिल्पा की समानताएँ है (30:4, 9; 32:22; 35:22)। "रखैल" की पदवी आगे एक अन्य विचार का समर्थन करती है कि जब अब्राहम ने कतूरा से विवाह किया था तब सारा जीवित थी।

आयत 2. कतूरा ने **जिम्रान, मिद्यान** और **यिशबाक** को जन्म दिया, जिनके विषय हमें कुछ भी मालूम नहीं। उनके भाइयों के साथ सम्बन्धों के आधार पर - **योक्षान, मिद्यान** और **शूह** - उनका सम्बन्ध आमतौर पर यरदन के पार और अरब के भिन्न भिन्न क्षेत्रों से है "योक्षान" आमतौर पर अरब में पाया गया क्योंकि यहाँ उसके बच्चे बस गए थेः "शबा" और "ददान" (25:3)। "मिद्यान" मिद्यानियों का पूर्वज था, जो अरब से पूर्व से लेकर सिनाय प्रायद्वीप के क्षेत्रों में घूमते रहते थे (निर्गमन 2:15, 16; 3:1; गिनती 10:12, 29-33)। यूसुफ़ की कहानी प्रकट करती है कि कभी कभी मिद्यानी पुराने मार्ग पर इश्माएलियों के साथ सहयोग करते थे। यह मार्ग मिस्र की ओर जाता था (37:25-28, 36)। "शूह" स्पष्ट रूप से शूहियों का पिता था जिनमें शूही बिल्दाद था जो अय्यूब के मित्रों से एक था (अय्यूब 2:11)। इसका सम्बन्ध अरब[1] के मृतक सागर के पूर्वी क्षेत्रों के साथ भी था।

आयत 3. शबा और **ददान** योक्षान के पुत्र के रूप में जाने गए हैं, परन्तु इनको उस वंशज के साथ भ्राती नहीं होनी चाहिए जो रामा से हाम के वंश में था (10:7)। इसके साथ ही साथ शेम के वंशज "शबा" में इसी नाम का व्यक्ति "योक्तान" है (10:26, 28, 29)। "शबा" "योक्तान" का पुत्र भी पहले के शबा से भिन्न है अब्राहम के सम्बन्ध के कारण।

ददान से अश्शूरी और लतुशी और लुम्मी पुत्र थे। तथ्य यह कि उनके नाम इब्रानी भाषा में बहुवचन के साथ अन्त ים *(इम)* होता हैं, जिसका अर्थ है कि इनका व्यक्तिगत उल्लेख नहीं है, परन्तु वंशज के नाम से है जो ददान के वंश के नाम[2] से जाने जाते थे। यह "अश्शूरी" वे नहीं थे जो बाद मेसोपोटामिया के पूर्वी भाग में अश्शूरी थे (10:11, 22)। इसके बजाए वह तो अरब के जंगल में एक वंश रहे हैं जो गिनती 24:22, 24 में "अश्शूर" नाम से जाने जाते थे।[3] "लतूशी"

और "लूम्मी" के विषय में निश्चित जानकारी नहीं है; परन्तु, क्योंकि वे अब्राहम के वंशज थे, यह अटकलें कि वे कम प्रसिद्ध अरब वंशज के नाम से भी जाने जाते थे जिनका परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा का भाग था कि बहुत सी जातियाँ होंगी।

आयत 4. अब्राहम के पोते जो **मिद्यान** से **एपा, एपेर, हनोक, अबीदा** और **एल्दा** थे। पहला, "एपा" यशायाह 60:6 मिद्यान और शबा के ऊँटों के झुण्ड के साथ जुड़ा हुआ है जो बाबुल की बंधुआई से वापिस आए यहूदियों के लिए सोना और लोबान लाए। भले ही मिद्यानियें के अन्तिम चार वंशजों की विश्वसनीय पहचान नहीं थी, उनके लिए ऐसा समझा जाता रहा कि वे अरब के उत्तरपश्चिम जातियाँ हैं जो प्राचीन झुण्डों के मार्ग में आने वाले नगरों या नखलिस्तान में बस गए।

आयतें 5, 6. इसहाक अब्राहम का ठहराया गया वारिस था, इसहाक को अपने पिता की **सारी** सम्पत्ति मिली (देखें 24:36), जबकि **रखेलियों** [हाजिरा और कतूरा] **के पुत्रों** को विरासत नहीं मिली। हम्मुरबी की व्यवस्था का नियम कहता है कि यदि किसी पिता ने अपनी उपपत्नी के पुत्रों को अपने जीवन काल में अपनी मुख्य पत्नी के पुत्रों के सम स्तर पर उन्नत नहीं किया तो उनके पिता की मृत्यु के बाद उसकी विरासत में किसी का कोई अधिकार नहीं है।[4] इश्माएल के मामले में अब्राहम ने उसे वैध वारिस के रूप में स्वीकार किया था (16:15; 17:18)। परन्तु, बाद में उसने उसे अपनी माता हाजिरा के साथ निकाल दिया था, परिवार में इसहाक के प्रत्येक खतरे को हटा दिया (21:10-14)। इस कठिन कार्य के द्वारा अब्राहम ने इश्माएल को पैतृक सम्पत्ति से वंचित कर दिया। क्योंकि इसहाक पहले ही प्रतिज्ञा के पुत्र के रूप में स्थापित था, कतूरा (उपपत्नी) के पुत्रों को कभी अब्राहम वारिस नहीं ठहराया था। उनको न्यून स्थान मिला और वे पूर्णतः उनके पिता की मर्ज़ी पर निर्भर थे। इसलिए, विरासत को बांटने की बजाए, अपने जीते जी **अब्राहम ने** अन्य पुत्रों को **कुछ कुछ** दे **दिया**।

कुलपति को सम्भवतः इस बात की चिन्ता थी कि उसके अन्य पुत्र उसकी मृत्यु के बाद इसहाक से विरासत लेने का प्रयास करेंगे। इसलिए, अब्राहम ने **उनको अपने पुत्र से दूर पूरब देश में भेज दिया**। "भेजने" के लिए इब्रानी शब्द के שָׁלַח *(शलाख)* अनुवाद प्रयोग तब भी किया गया जब अब्राहम ने हाजिरा और इश्माएल को "भेजा" था (21:14)। यहाँ जुड़ा हुआ शब्द "पूरब" קֶדֶם *(केदेम)* है जिसका अर्थ है स्थायित्व। यह भाषा आदम और हव्वा की ही याद ताज़ा करती है, जिनको परमेश्वर ने अदन की वाटिका से निकाल दिया था। जिस तरह से परमेश्वर ने कैन को बहेतू और भगोड़ा बनाकर निकाल दिया था। दोनों ही मामलों में व्यक्तिगत रूप से अदन के पूरब की ओर भेजा गया (3:23, 24; 4:14, 16)।

अब्राहम की मृत्यु और उसका दफ़नाया जाना (25:7-11)

[7]इब्राहीम की सारी अवस्था एक सौ पचहत्तर वर्ष की हुई। [8]और इब्राहीम का दीर्घायु होने के कारण अर्थात पूरे बुढ़ापे की अवस्था में प्राण छूट गया। और वह अपने लोगों में जा मिला। [9]और उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल ने, हित्ती

सोहर के पुत्र एप्रोन की मम्रे के सम्मुख वाली भूमि में, जो मकपेला की गुफ़ा थी, उस में उसको मिट्टी दी गई। [10]अर्थात जो भूमि इब्राहीम ने हित्तियों से मोल ली थी: उसी में इब्राहीम, और उस की पत्नी सारा, दोनों को मिट्टी दी गई। [11]इब्राहीम के मरने के पश्चात परमेश्वर ने उसके पुत्र इसहाक को जो लहैरोई नाम कुएं के पास रहता था आशीष दी।

आयतें 7, 8. अब्राहम की सारी अवस्था एक सौ पचहत्तर वर्ष की हुई। इसका अर्थ यह हुआ कि वह अपनी मृत्यु से पहले कनान देश में 100 वर्ष तक रहा (देखें 12:4)। परमेश्वर ने कुलपति को लम्बी आयु की प्रतिज्ञा दी थी (15:15), परमेश्वर के दिव्य वचन पूरे हुए। इस तरह की लम्बी आयु तक जीने से प्रमामिण होता है कि परमेश्वर ने उसको बड़ी आशीषें दीं थीं; परन्तु लम्बा जीवन जीना अलग बात है, और लम्बा और सुखी जीवन जीना बिलकुल अलग बात है। कुलपति की मृत्यु को देखा जाए तो हम जानते हैं कि वह न केवल "वृद्धावस्था" तक ही जीया परन्तु **वह जीवन से संतुष्ट भी था**। अर्थात, भलाई, आंतरिक संतुष्टि और मानसिक शान्ति के अनुभव का विश्वासयोग्य पिता।

अब्राहम की मृत्यु से सम्बन्धी यहाँ तीन भावों का प्रयोग किया गया हैः **उसका प्राण छूट गया**, वह "वृद्धावस्था में" **मरा**, और **अपने लोगों में जा मिला**। तीसरे भाव का अर्थ अनिश्चित है। (1) इसका सामान्य सा अर्थ है कि एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। इस मामले में, कहानीकार ने कुलपति की मृत्यु को तीन तरह से बताया। (2) इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि अब्राहम की देह को पारिवारिक कब्र, मकपेला की गुफ़ा में दफ़नाया गया। परन्तु उसे अगली आयत में स्पष्ट रूप से जो बताया गया है, वह देखते हुए इसके अर्थ को यहाँ लागू करना उचित नहीं होगा। (3) एक अन्य विचार यह है कि कथन यह दर्शाता है कि मृत्यु के समय क्या हुआ। तब यह इस बात का भी संकेत करेगा कि प्राण या आत्मा कुलपति के शरीर को छोड़कर चले गए और अधोलोक में अपने पुरखों में मिल गए। परमेश्वर के लोगों के जीवन के बाद पुरखों के समय सम्बन्धी विश्वास का प्रमाण अस्थिर है। परन्तु, इब्रानियों का लेखक दर्शाता है कि मृत्यु के बाद जीवन में उनका विश्वास थाः वे संसार में परदेशी और बाहरी है वे उत्तम देश की खोज में थे (इब्रा. 11:13-16)।

आयतें 9, 10. अब्राहम की मृत्यु ने दो सौतेले भाई - **इसहाक और इश्माएल** - को बहुत वर्षों के बाद मिलवाया। आपस में एक दूसरे के साथ कड़वाहट के बावजूद भी पिता और पुत्र के प्रेम को बांटा गया (17:18; 21:9-12; 22:2) हेब्रोन में दफ़नाए जाने के समय दोनों भाई मिले।[5] मूसा ने कुलपति के द्वारा **एप्रोन हित्ती** के हाथ से खरीदी गई **मकपेला की गुफ़ा** के वर्णन को दोहराया (देखें 23:1-20)। **दो पुत्रों** ने अपने पिता को **उसकी पत्नी सारा** के साथ **मिट्टी दी** (देखें 23:19)।

आयत 11. दिव्य आशीष के वर्णन का विषय एक बार फिर सामने आता है, जब वह **अब्राहम** से, उसके **मरने** के बाद **इसहाक** की ओर आती हैं। परन्तु हमारे पास कुलपति के परिवार पर इस आशीष को उच्चारित किए जाने का कोई

विवरण नहीं है। बाद में, इसहाक ने याकूब को आशीषित करते हुए ऐसा किया था, जिसने अपने पिता की दृष्टिहीनता का लाभ उठाया और उसे यह विश्वास करने के लिए धोखा दिया कि वह एसाव ही है (27:18-29)।

जैसा **परमेश्वर** ने "यहोवा ने सब बातों में अब्राहम को आशीष दी थी" (24:1), उसने अपने पुत्र **इसहाक को जो लहैरोई नाम कुएं के पास रहता था आशीष दी** (24:62)। विडम्बना यह है कि यह वही स्थान है जहाँ यहोवा का दूत हाजिरा पर प्रकट हुआ था, जब वह सारा से झगड़ा करके भाग रही थी। स्वर्गिक संदेशवाहक ने उसे अपनी मालकिन के पास जाने के लिए कहा, जहाँ पर उसके "इश्माएल" नाम का पुत्र उत्पन्न होगा, जो बहुत सी जातियों का पुरखा होगा (16:7-11)। तथ्य यह कि इसहाक लहैरोई में बस गया यह भी प्रकट करता है कि वह न केवल इश्माएल के स्थान पर रखा गया जिसको अब्राहम के परमेश्वर की आशीषों को लेना था परन्तु इश्माएल को देश के इस भाग से भी हटा दिया।

इश्माएल के वंशज (25:12-18)

[12]अब्राहम का पुत्र इश्माएल जो सारा की लौंडी हाजिरा मिस्री से उत्पन्न हुआ था, उसकी यह वंशावली है। [13]इश्माएल के पुत्रों के नाम और वंशावली यह है: अर्थात इश्माएल का जेठा पुत्र नबायोत, फिर केदार, अद्बेल, मिबसाम, [14]मिश्मा, दूमा, मस्सा, [15]हदर, तेमा, यतूर, नपीश, और केदमा। [16]इश्माएल के पुत्र ये ही हुए, और इन्हीं के नामों के अनुसार इनके गांवों, और छावनियों के नाम भी पड़े; और ये ही बारह अपने अपने कुल के प्रधान हुए। [17]इश्माएल की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई: तब उसके प्राण छूट गए, और वह अपने लोगों में जा मिला। [18]और उसके वंश हवीला से शूर तक, जो मिस्र के सम्मुख अश्शूर् के मार्ग में है, बस गए। और उनका भाग उनके सब भाई बन्धुओं के सम्मुख पड़ा।

अगला भाग पाठकों को स्मरण करवाता है कि इश्माएल "हाजिरा मिस्री" जो "सारा की दासी" थी उससे उत्पन्न कुलपति का पुत्र था। जैसा कि 16:1-4 में देखा गया, सारा के बांझ होने की स्थिति में उसने अब्राहम से विनती की कि वह दासी से पुत्र ले, इस आशा में कि उसे वारिस के रूप में वे चुन लेंगे। परन्तु इस मामले में ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि हाजिरा और इश्माएल को निकाल दिया गया था (21:8-21)। फिर भी, इश्माएल अब्राहम का पुत्र था; इससे पहले कि इसहाक प्रतिज्ञा के पुत्र के परिवार के इतिहास की ओर जाए, उत्पत्ति के लेखक ने इश्माएल के वंश को शामिल किया और कैसे परमेश्वर ने हाजिरा के साथ अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया (16:10, 11)।

आयत 12. इश्माएल की वंशावली תּוֹלְדוֹת *(तोलेडोथ)* का संक्षिप्त वर्णन इसाहक के जीवन की कहानी के लिए माध्यमिक काल की पहचान है। जैसा यह **हाजिरा** से उत्पन्न **अब्राहम के** [बड़े] **पुत्र** का आखिरी वर्णन देता है। यही वह

उपयुक्त स्थान है जहाँ इश्माएल, उसके पुत्र और उसकी मृत्यु के विषय में बताया गया, जबकि लेखक ने कतूरा के द्वारा 6 पुत्रों के नाम और उसकी मृत्यु का वर्णन किया (25:1-11)।

आयतें 13-15. जबकि अब्राहम और हाजिरा के एक ही पुत्र इश्माएल था, वह बहुफल व्यक्ति था। उसके 12 पुत्र थे, याकूब के पुत्रों के अनुरूप, भले ही याकूब बाद में उत्पत्ति के विवरण में प्रसिद्ध हो गया था। इश्माएल के कई पुत्र अरब जाति के साथ जाने गए। इस कारण से, कुछ लोग सोचते हैं कि इश्माएल ने 12 गोत्रों का संघ बनाया होगा, इस्राएल के 12 गोत्रों के समान। यह किसी भी तरह से निश्चित नहीं है। अरब के कठोर, सूखे वातावरण ने हमेशा ही नखलिस्तान की आस पास की बस्तियों में एकीकृत आदिवासी समूहों छितराने का काम किया है बजाए बढ़ाने के। अभी हाल ही के समय तक, अरब की सामान्य जीवन शैली अर्ध-खानाबदोश सी थी; अधिकांश लोग पानी और अपने जानवरों के लिए चारे की तलाश में घूमते रहते थे। अन्य लोग प्राचीन पूर्व की ओर झुण्डों में लगातार यात्रा करते थे।

इश्माएल के पुत्रों के नाम उनके जन्म के क्रमवार दिए गए हैं, **नबायोत** उसका **जेठा** था। बिलकुल यही वंशावली 1 इतिहास 1:29-31 में भी दी गई है। आगे चलकर लेख इशारा करता है कि एसाव ने इश्माएल की पुत्रियों और नाबायोत की बहिनों महलत (28:9) और बासमत से (36:3), से ब्याह किया।[6] जबकि "नबायोत" को नाबाती अरबों का संभावित जनक माना गया है, जिन्होंने चौथी शताब्दी ईसवीं पूर्व के पिछले भाग में एदोमियों पर विजय पाई, लेकिन यह सम्बन्ध निश्चित नहीं है।

केदार बाद के एक लड़ाकू अरब जनजाति का नाम है जिसका उल्लेख यशायाह 21:16, 17 में आया है। "केदार" के अन्य हवाले यशायाह 42:11 और 60:7 में मिलते हैं, जहाँ उसके परिवार के बसने का उल्लेख नबायोत के जनजाति के सम्बम्ध में दिया गया है (देखें यिर्म. 2:10; 49:28; यहेज. 27:21)।

अद्बेल और मिबसाम का उल्लेख केवल यहाँ तथा 1 इतिहास 1:29 में आया है। बहुतों का मानना है कि "अद्बेल" नाम अरब व्यक्तिगत तथा जनजाति के नाम इदिबा'इलु में प्रतिलिपित किया गया है, जिसे अश्शूर के राजा तिलगत-पिलनेसेर III (745-727 ई.पू.) नें उत्तरपश्चिम अरेबिया में हराया था।[7] "मिबसाम" नाम का अर्थ है "मसाला" या "मरहम," जो इब्रानी शब्द בֹּשֶׂם *(बोशेम)* से आया है। यह पुनः याकूब के पुत्र शिमोन की वंशावली (1 इतिहास 4:25) में आया है। इश्माएल के इस वंशज के बारे में इससे अधिक कुछ जानकारी नहीं है।

यही बात **मिश्मा** के लिए भी सत्य है, जो बाद में शिमोन की जनजाति की एक वंशावली (1 इतिहास 4:25) में मिबसाम के एक पुत्र के रूप में आया है। कुछ सोचते हैं कि जेबेल मिशमा', जो नखलिस्तानी नगर तेमा से 160 मील पूर्व में स्थित अरेबिया का पहाड़ है, वह स्थान है जो उसने तथा उसके वंशजों ने बसाया था; परन्तु इस पहचान की कोई निश्चितता नहीं है।

इसके बाद **दूमा** का उल्लेख है। यह नाम फिर से बहुत बाद में यशायाह द्वारा

करी गई भविष्यवाणी में मिलता है (यशा. 21:11, 12; NIV; NRSV; ESV), जहाँ दूमा[8] एदोम के भाग जैसा प्रतीत होता है। बहुत से इस "दूमा" को "अदुमतु" नामक अरब गढ़ से भी जोड़ते हैं, जिसे अश्शूर के राजा सेन्हेरीब ने अरबों और मिस्रियों के विरुद्ध अपने अभियानों में जीता था।[9]

मस्सा, इश्माएल के पुत्रों में से एक का व्यक्तिगत नाम, वह शब्द है जिसका इब्रानी में सामान्यतः अर्थ होता है, "बोझ" या एक "आकाशवाणी।" नीतिवचन 30:1 का वाक्यांश "मस्सा का जाकेह" (देखें NJB; NJPSV; REB), जताता है कि यह स्थान का नाम भी हो सकता है। "मस्सा" अरेबिया का एक नगर था जिसका, अश्शूरी इतिहास के अभिलेखों के अनुसार, तेमा से निकट संबंध था।[10]

हदद नाम यहाँ और 1 इतिहास 1:30 में मिलता है, लेकिन यही नाम बाद में एसाव के वंशजों द्वारा भी प्रयुक्त हुआ (36:35, 36; देखें 1 राजा 11:14-25; 1 इतिहास 1:46-51)। प्रतीत होता है कि नाम "हदद" अन्य यहूदी लोगों में भी प्रचलित हुआ; इसलिए इसके प्रयोग से इश्माएल अथवा एसाव से सीधा वंशागत संबंध प्रमाणित नहीं होता है, जैसा कि आज के समय में भिन्न जातीय समूहों में प्रयुक्त सामान्य नामों से उन समूहों का एक ही मूल एतिहासिक पूर्वज होना प्रमाणित नहीं होता।

तेमा, उत्तरपश्चिम अरेबिया के एक महत्वपूर्ण नखलिसतान का नाम पड़ा (वर्तमान तेय्मा')। प्राचीन काल से, यहाँ आकर काफिलों के मार्ग मिलते थे। इसका उल्लेख शबा के साथ (अय्युब 6:19), तथा बाद में ददान (यशा. 21:13, 14; यिर्म. 25:23) के साथ मिलता है। इसके अतिरिक्त, बाबुल का राजा नबोनिदुस (556-539 ई.पू.) दस वर्ष तक तेमा में रहा, जबकि उसका पुत्र बेलशस्सर बाबुल में उनके साम्राज्य के अन्तिम दिनों में शासन किया था (देखें दानिय्येल 5:1-30)।

यतूर और नापीश उत्तरी यरदन पार जाकर बस गए, लेकिन उनके स्थान की सटीक जानकारी होने के बारे में एकमत नहीं है। जब इस्राएली कनान पर चढ़ाई कि तैयारी कर रहे थे, तब "यतूर" और "नापीश" के वंशज यरदन के पूर्व में रूबेन, गाद और मनश्शे के आधे गोत्रों द्वारा किए गए धावे में मारे गए या वशीभूत हो गए (1 इतिहास 5:18-22)। बहुतेरों का मानना है कि प्रथम शताबदी ई. तक, यतूर और उसके वंश के लोग इतूरैया के लोगों के पूर्वज हैं (लूका 3:1), जो पलिस्तीन के उत्तर और लबानोन पर्वत के पूर्व में रहते थे।

व्यक्तिगत नाम **केदमा** केवल इसी लेख और 1 इतिहास 1:31 में ही मिलता है। इब्रानी शब्द קַדְמָה *(केदेमाह)* का अर्थ है "पूर्व की ओर" या "पूर्वी" (देखें 13:14; 28:14)। कुछ का विचार है कि जब याकूब "पूर्वियों के देश में आया" (29:1), तो उसका सामना इन लोगों से हुआ होगा, जो इश्माएल के पुत्रों के वंशज थे। मगर, प्रयुकत भाषा संभवतः कनान के उत्तरपूर्व, हारान (29:4) में, रहने वाले लोगों के लिए केवल एक सामान्य अभिव्यक्ति है। "पूर्वियों" के अनेक समूह ("कदमोनि"; 15:19) भी कनान के इलाके में रहते थे।

आयत 16. इश्माएल के **पुत्रों** के नाम बताने के बाद वर्णनकर्ता उसके वंशजों

के रहने के स्थानों के बारे में बताता है। कुछ **गाँवों** में रहते थे (חָצֵר, *चैटसर* से) जो कि मित्र नगरों के निकट बसी बिना चारदिवारी की बस्तियाँ थीं (देखें लैव्य. 25:31; व्यव. 2:23; यहोशु 19:8)। अन्य नगरों के पास डेरों में (देखें गिनती 31:10; यहेज. 25:4) (טִירָה, *तिरह* से) रहते थे। संभवतः, ये "पड़ाव" (NRSV; NEB; NJPSV) पत्थरों से बनी दीवारों से सुरक्षित किए जाते थे।[11] समय के साथ इश्माएल के बारह पुत्र बारह कुल बन गए जिनके ऊपर **बारह प्रधान** (נָשִׂיא, *नासी*, "कुल का मुख्या") थे।

आयत 17. लेखक ने इश्माएल के जीवन का प्ररूपी वर्णन किया है, कि **इश्माएल की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई: तब उसके प्राण छूट गए, और वह अपने लोगों में जा मिला**। इश्माएल के देहांत का, उसके पिता अब्राहम (25:7, 8) से तुलना करने का तात्पर्य है कि उसका तथा उसके वंशजों का बाइबल के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इसके साथ ही इश्माएल के पुत्रों (बारह) और उसके जीवन की बहुतायत (137 वर्ष) उसपर परमेश्वर की आशीषों की गवाही देती हैं, जैसा कि प्रभु ने हजिरा से वायदा किया था (16:10, 11)।

आयत 18. मूसा ने इश्माएल के वंशजों के निवास स्थान का एक वर्णन जोड़ा है: **वे हवीला से शूर तक बस गए**। यह बाद वाला स्थान संभवतः मिस्र के मार्ग पर उत्तरी सीनै में कनान के दक्षिणपश्चिम में था। हाजिरा इसी स्थान की ओर जा रही थी जब परमेश्वर का दूत सर्वप्रथम उसके पास आया (देखें 16:7 पर टिप्पणी)। हवीला संभवतः अरेबिया का एक स्थान है (देखें 2:11, 12 पर टिप्पणी), और दोनों **मिस्र के सम्मुख अश्शूर के मार्ग में है**। अश्शूर के हवाले से उत्तरपूर्वी मेसोपोटामिया के अश्शूर का भ्रम नहीं होना चाहिए; यह संभवतः सिनै प्रायद्वीप या अरेबिया के एक क्षेत्र को दिखाता है (देखें 25:3 पर टिप्पणी)।

समापन वाक्य कहता है **सब भाई-बन्धुओं के सम्मुख पड़ा**। इब्रानी वाक्यांश עַל־פְּנֵי *(एलपेने)* का शब्दार्थ है "मुख के विरुद्ध।" कुछ अनुवाद कहते हैं कि इश्माएल अपने बढ़े हुए परिवार की "अवज्ञा में" (NASB) या उनके प्रति "विरोध में" (NIV) बस गया। "अवज्ञा" या "विरोध" करने की मनःस्थिति 16:12 की भविष्यवाणी से मेल खाती है कि "उसका हाथ सबके विरुद्ध उठेगा।" हो सकता है कि वह रूखी प्रकृति का मनुष्य हो जिस कारण वह ना केवल अपरिचितों, से वरन अपनी ही सन्तान और उनके परिवारों से भी झगड़ालू व्यवहार रखता हो। अन्य अनुवाद कहते हैं कि वह अपने लोगों के "साथ-साथ" बस गया (NRSV; NJPSV), जो उनके साथ शांतिप्रीय संबंध दिखाता है। वाक्यांश "मुख के विरुद्ध" उसके वंशजों के डेरों से अपने डेरे के रुख से, यानी उनसे "पूर्व में" (NEB) होने को भी दिखा सकता है। यही इब्रानी वाक्यांश 16:12 में भी मिलता है, जहाँ NASB कहती है "वह अपने भाईयों के पूर्व में रहा।"

एसाव और याकूब का जन्म (25:19-26)

[19]अब्राहम के पुत्र इसहाक की वंशावली यह है: अब्राहम से इसहाक उत्पन्न

हुआ। 20और इसहाक ने चालीस वर्ष का हो कर रिबका से, जो पद्दनराम के वासी, अरामी बतूएल की बेटी, और अरामी लाबान की बहिन थी, विवाह कर लिया। 21इसहाक की पत्नी तो बाँझ थी, इसलिए उस ने उस के निमित्त यहोवा से विनती की: और यहोवा ने उसकी विनती सुनी, इस प्रकार उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई। 22लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपट के एक दूसरे को मारने लगे: तब उसने कहा, "मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं क्योंकर जीवित रहूंगी?" और वह यहोवा की इच्छा पूछने को गई। 23तब यहोवा ने उस से कहा, "तेरे गर्भ में दो जातियां हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे, और बड़ा बेटा छोटे के आधीन होगा।" 24जब उसके प्रसव का समय आया, तब क्या प्रगट हुआ, कि उसके गर्भ में जुड़वें बालक हैं। 25और पहिला जो उत्पन्न हुआ सो लाल निकला, और उसका सारा शरीर कम्बल के समान रोममय था; सो उसका नाम एसाव रखा गया। 26पीछे उसका भाई अपने हाथ से एसाव की एड़ी पकड़े हुए उत्पन्न हुआ, और उसका नाम याकूब रखा गया। और जब रिबका ने उनको जन्म दिया तब इसहाक साठ वर्ष का था।

इश्माएल के वंशजों पर चर्चा करने के पश्चात, लेख इसहाक की ओर लौटता है और उसके परिवार से होकर उत्पत्ति की कहानी को आगे बढ़ाता है। इस ही वाचा किए हुए पुत्र से होकर अब्राहम से किए गए परमेश्वर के और वायदे पूरे होने लगते हैं जब नए राष्ट्रों के मूल पुरुष जन्म लेते हैं।

आयतें 19, 20. उत्पत्ति की पुस्तक में תּוֹלְדוֹת *(तोलेडोथ)* यहाँ आठवीं बार आया है, और यहाँ इसे **वंशावली** का रूप दिया गया है। अब जो यहाँ से आगे होता है वह वंश का लेख कम और **इसहाक** और उसके पुत्रों के पैतृक घटनाक्रम का वर्णन अधिक है। इस खण्ड का NIV में परिचय इन शब्दों से हुआ है, "यह अब्राहम के पुत्र इसहाक का वृतांत *[तोलेदोथ]* है," जबकि बाइबल का वृतांत यहाँ इसहाक के जीवन के बारे में कम ही बताता है। वाचा की इस सन्तान का उल्लेख मुख्यतः अपने पिता, अब्राहम, या फिर उसके पुत्र याकूब से सम्बन्धित है।

यह खण्ड यह स्मरण दिलाने के साथ आरंभ होता है कि **अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ** (देखें 21:1-3)। लेख आगे कहता है कि **इसहाक ने चालीस वर्ष का हो कर रिबका से, जो पद्दनराम के वासी, अरामी बतूएल की बेटी, और अरामी लाबान की बहिन थी, विवाह कर लिया** (देखें 24:62-67)। लेख इस बात का खुलासा नहीं करता है कि विवाह के समय इसहाक चालीस वर्ष का क्यों था या यह कि निकट पूर्व के लोग इस आयु को विवाह के लिए उपयुक्त समझते थे (देखें 26:34)। बहुत बाद में रब्बियों द्वारा लिखे गए लेखों से हम इतना जानने पाते हैं कि सामान्यतः पुरुष के लिए विवाह की आयु अठारह से बीस वर्ष होती थी,[12] परन्तु संभव है कि कुलपतियों के उस काल में परंपराएं भिन्न थीं।

यह भी संभव है कि इसहाक इतने वर्ष अविवाहित इसलिए रहा क्योंकि अब्राहम अपने पुत्र के लिए कनानियों में से उपयुक्त वधू ढूँढने में संकोच करता

था। अन्ततः, लंबी हिचकिचाहट के पश्चात, उसका निष्कर्ष था कि वाचा किए हुए देश में कोई उपयुक्त साथी उपलब्ध नहीं है। इसलिए उसने अपने सबसे भरोसेमंद दास को यात्रा करके हारान जो पद्दनराम, जो उत्तरी-पश्चिम मेसोपोटामिया या अराम नाहरैम का एक और नाम है (देखें 24:10) जाए। वहाँ उसे उसके भाई नाहोर के पुत्र, बतूएल को ढूँढना था, ताकि वह उसके उन कुटुंबियों में से इसहाक के लिए उपयुक्त पत्नी देख सके।

रिबका से इसहाक के विवाह के विवरण को संक्षिप्त में बताते हुए, लेखक उसे **अरामी लाबान की बहन** कहके संबोधित करता है (देखें 24:29, 50)। संभव है कि ऐसा उन समस्याओं के पूर्वानुमान के कारण हो जो याकूब को अपने ससुर से होने वाली थीं (अध्याय 29-31)।

आयत 21. क्योंकि लेखक इसहाक के रिबका से विवाह का उल्लेख पहले ही कर चुका था (24:67; 25:20), वह आगे उनके पुत्रों के जन्म से संबंधित घटनाओं की ओर बढ़ जाता है। जैसे कि सारा अपने अधिकांश जीवन गर्भवती नहीं होने पाई, वैसे ही रिबका भी विवाह के लगभग बीस वर्ष बाद तक बाँझ रही (25:20, 26)। फिर भी, जैसे सारा ने अब्राहम को अपनी दासी हाजिरा को अपना कर उससे सन्तान उत्पन करने के लिए दबाव डाला था, उसने वैसा करने के लिए इसहाक को नहीं उकसाया। वरन**, इसहाक ने उसके निमित्त यहोवा से विनती की।** जो इब्रानी शब्द यहाँ विनती के लिए प्रयोग हुआ है वह עָתַר *('अथर)* है, और यह पुराने नियम में "मध्यस्थता करने के लिए प्रयुक्त सबसे महत्वपूर्ण शब्दों में से एक"[13] है। यह इसहाक की विनती की गंभीरता को प्रतिबिंबित करता है कि परमेश्वर रिबका की कोख को जीवन प्रदान करे (देखें निर्गमन 8:8, 9, 28-30; 9:28; 10:17, 18; न्यायियों 13:8; 2 शमूएल 24:25)। इसके फलस्वरूप **यहोवा** अनुग्रहकारी हुआ। उसने इसहाक की **विनती सुनी**, और **उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई**। इसहाक की प्रार्थना का उत्तर जुड़वाँ गर्भावस्था थी।

आयत 22. लड़के जैसे जैसे रिबका की कोख में बढ़ते गए, **वे आपस में लिपट के एक दूसरे को मारने लगे**। "संघर्ष" के लिए इब्रानी शब्द है רָצַץ *(राटसाट्स)*, जो एक सशक्त शब्द है जिसका अर्थ होता है "कुचलना" या "टुकड़ों में तोड़ना।"[14] रिबका की कोख में होने वाला यह संघर्ष इतना उग्र था कि उसे अपनी जान को खतरा लगने लगा। उसकी आरंभिक समस्या थी गर्भवती होना, किंतु अब गर्भवती होना उसे इतनी व्यथा दे रहा था कि वह सोचने लगी कि क्या यह इस दर्द और कष्ट को झेलने के योग्य है। इब्रानी में इस बात के लिए उसका प्रत्युत्तर अधूरा है, इसलिए अनुवादक उसके अर्थ के बारे में अध्ययनशील अनुमान ही लगा सकते हैं। यह तो समझ में आता है कि क्यों जो महिला उसके समान दर्द सह रही थी उसने पूरा व्याकरणिक वाक्य नहीं बोला होगा; फिर भी संभवतः NASB उसकी पुकार के मूल विचार को पकड़ती है: **"मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं क्योंकर जीवित रहूंगी?"** दूसरे शब्दों में हो सकता है कि उसने कुछ इस प्रकार सोचा हो: "इतने समय के बाद, परमेश्वर क्यों मुझे गर्भवती होने के

योग्य करके, जुड़वाँ बच्चों के कारण इतना दुःख देगा, जिनकी उग्र हलचल मुझे ऐसा अनुभव करवाती है मानो मेरे अन्दर द्वन्द हो रहा है?" वह विचार कर रही थी, "क्या वे अपने परस्पर संघर्ष में सलामत बच पाएंगे? क्या इस कड़ी परीक्षा में मैं बच पाऊँगी?"

हताशा में, **वह यहोवा की इच्छा पूछने को गई**। यह कथन कुछ उलझन वाला है। इसके बाद के बाइबल के इतिहास में, ऐसा करने के लिए किसी भविष्यद्वक्ता से परामर्श लिया जाता था (निर्गमन 18:15; 1 शमूएल 9:9; 1 राजा 22:8)। लेकिन, ऐसा कोई संकेत नहीं है कि कोई "परमेश्वर का जन" जैसे कि मलिकिसिदक, उस समय शालेम (यरूशलेम) में था।[15] ना ही लेख यह संकेत देता है कि वह किसी भविष्यद्वक्ता को ढूँढने किसी अन्य पवित्र स्थान को गई, जैसा कि कुछ टीकाकार मानते हैं। यदि वह ऐसा कोई व्यक्ति ढूँढना भी चाहती, तो ऐसा संभव नहीं है कि उसकी शारीरिक दशा उसे ऐसी यात्रा की अनुमति देती। इस संदर्भ में, फिर, इस कथन का साधारण सा अर्थ यही होगा कि उसने अपने पति द्वारा बनाई गई किसी निकट की वेदी पर प्रार्थना में प्रभु को खोजा। अधिक संभव यह है कि, उसने इसहाक से कहा कि वह परमेश्वर से प्रार्थना में उसके लिए मध्यस्थता करे, जैसा कि उसने पहले किया था (25:21)।

आयत 23. जो भी रिबका ने किया और जैसे भी उसने उत्तर पाया, प्रभु का उत्तर शीघ्र ही आ गया। वह उस पर उस हताशा के समय में अनुग्रहकारी हुआ। परमेश्वर ने उसे बताया कि उसके **गर्भ** में जुड़वाँ संघर्ष कर रहे हैं, और उसने यह प्रकट किया कि वे **दो जातियां हैं**, जो उनसे उत्पन्न होंगे, प्रतीक हैं। इससे उसे अब्राहम और सारा से किए गए परमेश्वर के वायदे - कि वे अनेक जातियों के जनक होंगे (17:4-6, 16) - के प्रति सकारात्मक आश्वासन मिला कि वह अभी भी लागू है। वह जान गई कि उसकी सन्तान इस वायदे के पूरा होने में कार्यकारी होगी।

लेकिन, उसकी कोख में चल रहे जुड़वों के इस संघर्ष से संबंधित भविष्यवाणी का नकारात्मक पहलू भी था। यद्यपि प्रगट है कि वह यह नहीं समझ पाई थी कि भविष्य के लिए इसका क्या तात्पर्य होगा, भविष्यवाणी संघर्ष के जारी रहने का पूर्वानुमान थी। आने वाले वर्षों में याकूब चालाकी से एसाव के भूखे होने का लाभ उठाएगा और उसे अपना जन्माधिकार बेचने के लिए मनवा लेगा (25:29-34)। साथ ही यहाँ इस बात का भी पूर्वाभास है कि किस प्रकार यह माँ और बेटा मिलकर अन्धे इसहाक को धोखा देंगे कि वह अपनी मरणशैया से याकूब को यह समझकर कि वह एसाव को दे रहा है आशीष दे (27:18-29)।

इस भविष्यवाणी की संपूर्ण पूर्ति याकूब और एसाव के वंशजों को भी सम्मिलित करती है, जो लगातार परस्पर संघर्ष का अनुभव करेंगे जो उन्हें **दो जातियों** में विभाजित कर देगा। **बड़े** के वंशज **छोटे** के वंशजों **के अधीन होंगे**, क्योंकि वह दोनों में से **अधिक सामर्थी होंगे**। इसलिए यह भविष्यवाणी प्राथमिक रूप में व्यक्तिगत एसाव और याकूब के बारे में नहीं थी, चाहे वे दोनों गर्भ में और फिर बड़े होकर वर्चस्व के लिए संघर्षरत रहे। वास्तविकता में एसाव ने - जो कि बड़ा था - कभी अपने छोटे भाई याकूब की सेवा नहीं की। जो परमेश्वर ने विचार

किया था वह था भविष्य में एदोमियों पर इस्राएलियों द्वारा प्रभुता करना, जो क्रमशः एसाव और याकूब से निकलेंगे। लेकिन फिर भी, इन दोनों के बीच का संघर्ष अपनी चरम सीमा पर दाऊद के समय में पहुँचा; और तब इस्राएलियों ने एदोमियों को हरा कर आधीन कर लिया (2 शमूएल 8:14)।

आयत 24. बहुत कठिनाई से रिबका ने **अपने गर्भ में** संघर्ष कर रही सन्तान को प्रसव के पूरे समय तक पहुँचाया। रिबका के जुड़वाँ पुत्रों को जन्म देने के द्वारा पहेलीनुमा भविष्यवाणी का पहला भाग पूरा हुआ।

आयत 25. पहिला जो उत्पन्न हुआ उसका वर्णन है **लाल**, **उसका सारा शरीर कम्बल के समान रोममय था**। यह जानना कठिन है कि "लाल" की कौन सी रंगत (אַדְמוֹנִי, *अदमोनी)* यहाँ कही गई है,[16] परन्तु संभवतः कथन का अर्थ है कि वह लाली लिए हुए भरा था। यही इब्रानी शब्द 1 शमूएल 16:12; 17:42 में दाऊद पर लाली झलकने के लिए भी प्रयुक्त किया गया है। यह स्पष्ट नहीं है कि यह वर्णन पहलौठे के बालों का है या उसकी खाल का। चाहे जो भी हो, निश्चित रुप से यह उसके दूसरे नाम: "एदोम" (25:30; אֱדוֹם, *एदोम)* को लेकर किया गया शब्दों का खेल है, जो उसी इब्रानी मूल "लाल" से आता है।[17] शब्द "रोममय" (שֵׂעָר, *सेअर)* और भी अधिक जटिल है, लेकिन वह भी **एसाव** (עֵשָׂו, *इसाव)* नाम में प्रतिबिंबित होता है, जिसके वही दो आरंभिक व्यंजन विप्रीत क्रम में हैं, जिससे दोनों शब्दों के उच्चरण स्वर में खेल आ जाता है। इसी प्रकार, *सेअर* ("रोममय") और *सेईर* (שֵׂעִיר, *सेईर*),[18] जो अकसर "सेईर पहाड़" कहलाता है (व्यव. 1:2; 2:1, 5; यहोशु 15:10; 24:4), जो कि मृत सागर के दक्षिण और पूर्व (32:3; 36:8, 9; न्यायियों 5:4) की ओर एदोमियों के निवास का मुख्य स्थान था।

आयत 26. एसाव के जन्म के पश्चात, दूसरा पुत्र भी बाहर आया; और क्योंकि **उसका हाथ एसाव की ऐड़ी को पकड़े हुए था**, उन्होंने उसका नाम **याकूब** रखा। इस नाम "याकूब" (יַעֲקֹב, *याकूब)* का शब्दार्थ होता है "वह जो ऐड़ी से पकड़े या कपट से हटाना।" यहाँ दिया गया प्रतीकवाद महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐसा लग रहा था मानो दूसरा लड़का अपने भाई को पकड़ कर पीछे कर देने का प्रयास कर रहा हो, और कोख ही से चल रहा यह संघर्ष आगे भी उनके जीवन में चलते रहने का पूर्वाभास था। इसके साथ ही संज्ञा "ऐड़ी" (עָקֵב, *'अकीब*) संबंध रखती है क्रिया "धोखा देने" (עָקַב, *'अकाबी)* से; इसलिए "ऐड़ी" शब्द रूपकालंकार के समान, एक विश्वासयोग्य मित्र के धोखे ("मेरे विरुद्ध अपनी लात उठाई"; भजन 41:9) के संदर्भ में भी प्रयुक्त हो सकता है।

चरित्र के ये दोष याकूब के जीवन में जल्दी ही विकसित हो गए। इस प्रवृति ने ही अपने भाई से छल करने और उससे लाभ उठाने और अपने पिता से झूठ बोलने तथा उन्हें धोखा देने (27:18-29) में उसकी अगुवाई करी। **जब रिबका ने उनको जन्म दिया** तब **इसहाक साठ वर्ष का था**। लेख यह प्रगट नहीं करता कि जब उसकी पत्नी और पुत्र ने उसे धोखा देने का षड़यंत्र रचा तब वह कितने वर्ष का था। एसाव और याकूब उस समय तक व्यस्क हो चुके थे, और इसहाक अन्धा हो गया था तथा उसने अपने आप को "बूढ़ा" कहा (27:1, 2)। इसके अलावा, इसहाक ने

सोचा कि वह मृत्यु के निकट हो सकता है जब उसने एसाव के बजाय गलती से याकूब को आशीर्वाद दिया (27:2, 4)। अपने इस निर्णय में वह गलत था क्योंकि जब तक इसहाक 180 का नहीं हो गया उसे मृत्यु नहीं आई (35:27, 28)।

याकूब का एसाव से उसका जन्माधिकार का सौदा करना (25:27-34)

[27]फिर वे लड़के बढ़ने लगे और एसाव तो वनवासी हो कर चतुर शिकार खेलने वाला हो गया, पर याकूब सीधा मनुष्य था, और तम्बुओं में रहा करता था। [28]इसहाक एसाव के अहेर का मांस खाया करता था, इसलिये वह उस से प्रीति रखता था; पर रिबका याकूब से प्रीति रखती थी। [29]एक दिन याकूब भोजन के लिये कुछ दाल पका रहा था; और एसाव जंगल से थका हुआ आया। [30]तब एसाव ने याकूब से कहा, "वह जो लाल वस्तु है, उसी लाल वस्तु में से मुझे कुछ खिला, क्योंकि मैं थका हूं।" इसी कारण उसका नाम एदोम भी पड़ा। [31]याकूब ने कहा, "अपना पहिलौठे का अधिकार आज मेरे हाथ बेच दे।" [32]एसाव ने कहा, "देख, मैं तो अभी मरने पर हूं: इसलिए पहिलौठे के अधिकार से मेरा क्या लाभ होगा?" [33]याकूब ने कहा, "मुझ से अभी शपथ खा," अतः उसने उससे शपथ खाई, और अपना पहिलौठे का अधिकार याकूब के हाथ बेच डाला। [34]इस पर याकूब ने एसाव को रोटी और पकाई हुई मसूर की दाल दी; और उसने खाया पिया, और उठ कर चला गया। यों एसाव ने अपना पहिलौठे का अधिकार तुच्छ जाना।

यह संक्षिप्त वृतांत परमेश्वर के चुने हुए लोगों की त्रुटियों का चित्रण करता है। यह गलत प्राथमिकताओं, पक्षपात, ठगी, तथा धोखे के प्रति मानवीय प्रवृतियों को चित्रांकन करता है।

आयत 27. जैसे जैसे **वे लड़के बढ़ने लगे**, यह प्रगट होता गया कि उनके व्यवहार एवं रुचि बहुत भिन्न थे। **एसाव**, रूखा और रोममय बालक, **वनवासी हो कर चतुर शिकार खेलने वाला हो गया**। उसे बाहर खुले की गतिविधियों में आनन्द मिलता था। इसकी तुलना में, **याकूब सीधा** और **तम्बुओं** में रहने वाला व्यक्ति था। वह अलग रहता, तथा अपना अधिकांश समय तंबुओं में बिताता था। इस लेख में जिस शब्द का अनुवाद "सीधा" हुआ है वह है תָּם *(थाम)*, जिसका अर्थ अकसर "सिद्ध" या "निर्दोष" लिया जाता है (अय्युब 1:1, 8; 8:20; भजन 37:37; नीति. 29:10)। लेकिन, जैसा कि वृतांत प्रगट करता है, याकूब निश्चय ही सिद्ध या निर्दोष नहीं था। इस संदर्भ में इनमें से कोई भी परिभाषा उपयुक्त नहीं है क्योंकि लेखक एसाव जो बाहर रहने वाला साहसी,[19] तथा घर में रहना पसन्द करने वाले सीधे याकूब[20] की तुलना कर रहा था।

आयत 28. हमें यह नहीं बताया गया है कि याकूब और एसाव के मध्य, 25:29-34 की घटनाओं से पहले से ही, क्या कोई गंभीर विरोध था; लेकिन उनकी जो भी समस्याएं रही होंगी, उनको अभिभावकों के पक्षपात से बढ़ावा मिला होगा। लेख कहता है, **इसहाक एसाव के अहेर का मांस खाया करता था,**

इसलिये वह उस से प्रीति रखता था। लेकिन, कोई कारण नही दिया गया है कि क्यों **रिबका याकूब से प्रीति रखती थी**। ऐसा हो सकता है कि उसका स्वभाव और रुचि अपनी माँ के समान अधिक थे। इसी कारण वह उनके साथ घर पर अधिक रहता था, जबकि एसाव बाहर मैदानों में शिकार करने जाता रहता था। प्रत्येक अभिभावक भिन्न पुत्र से "प्रेम" (אָהֵב, *'aheb*) करता था; लेकिन इब्रानी शब्द परिवार के सदस्यों में प्रेम बताने वाला सामान्य शब्द है। इस शब्द का यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि कोई भी अभिभावक उस पुत्र से जिसका वह पक्ष नहीं करता था कोई बैर रखता था, वरन यह कि वे एक की बजाए दूसरे को अधिक पसन्द करते या उसका पक्ष अधिक लेते थे (देखें 29:30-33)।

आयतें 29, 30. जैसा सामान्यतः होता था, **याकूब** घर पर ही था जबकि **एसाव** शिकार करने बाहर गया हुआ था। विडंबना यह है, कि इस बार एसाव खाली हाथ घर लौटा। उसने देर तक और मेहनत से शिकार की खोज की थी परन्तु असफल रहा। जब तक एसाव परिवार के डेरे पर लौटा, वह थका हुआ और भूखा था। लेख उसे भूख से बेहाल बताता है। इस शब्द का अर्थ है कि **थका** עָיֵף *(आयेप)* हुआ। शरीर की ऐसी निर्बल अवस्था में, एसाव अपने चालाक भाई याकूब के चँगुल में फंस सकता था।

जब उसे ज्ञात हुआ कि उसके छोटे भाई ने कुछ **दाल पकाई** है, उसने तुरंत ही कुछ खाने की इच्छा व्यक्त की। उसने दाल की हंडिया को **लाल वस्तु** कहा। यहाँ मूसा ने कोष्टकों में एसाव के नाम के साथ एक और खेल खेला है, उसे **एदोम** אֱדוֹם *(एदोम)* के साथ जोड़कर, जो कि इब्रानी शब्द "लाल" אָדֹם *(अदोम)* से आया है (देखें 25:25 पर टिप्पणी)।

आयत 31. याकूब शातिर था और उसने एसाव की इस दुर्बलता की घड़ी का लाभ उठाया। उसने माँग रखी कि उसका भाई अपने **पहिलौठे का अधिकार** को उसे **पहले बेचे,** तब वह उसे कुछ दाल देगा। यह "जन्माधिकार" (בְּכֹרָה, *बेकोराह*) "पहलौठे" (בְּכוֹר, *बेकोर*) का होता था; और यह एसाव को थोड़े से समय के अन्तराल के कारण प्राप्त हुआ था (25:25, 26)। प्राचीन निकट पूर्व में, दूसरे या अन्य सहोदरों की तुलना में पहलौठे की विरासत की मात्रा निर्धारित करने के लिए कोई समरूप कानून या प्रथाएं नहीं थीं। बाद में मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत (व्यव. 21:15-17), पहलौठे को विरासत में दोगुना मिलना था। इसी प्रकार, मेसोपोटामिया की नूज़ी तख्ती (पंद्रहवीं शाताब्दी ई.पू.) में भी उल्लेख है कि प्राकृतिक पहलौठे को दोगुना भाग मिलना था, लेकिन ऐसा दत्तक पुत्र के लिए नहीं था।[21] विरासत का कितना भाग याकूब के समय में जन्माधिकार में आता था, यह स्पष्ट नहीं है। यद्यपि नूज़ी तख्तियाँ इससे बाद के समय की हैं, वे दिखाती हैं कि एक भाई अपने जन्माधिकार को यदा कदा अपने सहोदर को बेच देता था, जैसा एसाव ने अपने छोटे भाई याकूब के साथ किया था। कुछ सीमा तक यह अभिलेख उत्पत्ति 25:27-34 के समानान्तर का लेख प्रदान करता है।[22]

आयत 32. एसाव इतना थका हुआ था कि याकूब की दाल की सुगन्ध ने उसकी निर्णय क्षमता को दबा दिया। उसने अपने आप को अपने भाई की योजना

में फंसने के लिए, अपनी दुर्दशा को बढ़ा चढ़ा कर बताने और यह दावा करने कि **वह मरने पर है**, और संवेदनशील बना दिया। यदि वास्तव में ऐसा होता तो, याकूब की यह अवसरवादिता और भी अधिक निर्दयी हो जाती है, यद्यपि तब **पहिलौठे का अधिकार** एसाव के लिए अर्थहीन हो जाता। लेकिन एसाव ने अपनी स्थिति की गंभीरता को बढ़ा चढ़ा कर बताया। इस घटना से हम जीवन की मूलभूत बातों के लिए उसके चरित्र की दुर्बलता को देखते हैं। उसमें विश्वास की घटी थी और वह केवल उस पल के लिए ही जीता था, बजाए यह कि अपने निर्णयों के दूरगामी प्रभावों पर ध्यान करे।

आयत 33. याकूब शातिर चालबाज़ था जो भविष्य के लिए सौदा कर रहा था। उसने एसाव के असावधानी से तथा बिना सोचे विचारे कार्य करने के स्वभाव का लाभ उठाया, और उसे एक कटोरे दाल के बदले अपना जन्माधिकार बेचने के लिए छला। इससे पहले कि वह उसे खा लेने की अनुमति देता, याकूब ने माँग की कि उसका भाई उससे शपथ खाए; वह जानता था कि एक बार शपथ खाने के बाद निर्णय पूर्णत्या लागू और अपरिवर्तनीय था। इस माँग से एसाव रुका नहीं; उसने उससे **शपथ** खा ली, और अपना **पहिलौठे का अधिकार** बेच दिया।

आयत 34. सौदा पूरा होने पर, धोखेबाज़ **याकूब** ने, **एसाव को रोटी और पकाई हुई मसूर की दाल दी**, और साथ ही कुछ पीने के लिए भी दिया। अपनी भूख को शांत करके, जेठा पुत्र **उठकर चला गया**। एक संक्षिप्त सारांश में, लेखक ने जो इन भाईयों के मध्य हुआ उसका मूल्यांकन किया, और निष्कर्ष निकाला कि एसाव ने अपना **पहिलौठे का अधिकार तुच्छ जाना**। जो शब्द "तुच्छ" בָּזָה *(बाज़ाह)* के लिए प्रयुक्त हुआ है उसका अर्थ है "तिरस्कार" या "अवमानना।"[23] यह किसी वस्तु की कीमत को कम आंकने के लिए प्रयोग होने वाला एक कठोर शब्द है। इसमें मनुष्य, परमेश्वर, या ईश्वरीय आशीषों को सर्वथा तुच्छ समझने का भाव सम्मिलित है (देखें गिनती 15:30, 31; 2 शमूएल 12:10; यहेज. 16:59; 17:16, 18; मलाकी 1:6, 7)।

इब्रानियों का लेखक इस घटना के द्वारा सचेत करता है उन मसीहियों को जो अपने आत्मिक जीवनों में दुर्बल थे और विरोध और सताव के कारण मसीह में अपने विश्वास को त्यागने के जोखिम में थे। उसने उन्हें धिक्कारते हुए कहा,

> और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूट कर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं। ऐसा न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव की समान अधर्मी हो, जिस ने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला। तुम जानते तो हो, कि बाद में जब उसने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया, और आंसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला (इब्रा. 12:15-17)।

अनुप्रयोग

परमेश्वर द्वारा इसहाक और याकूब का भौतिक चुनाव (25:1-28)

जब परमेश्वर ने अब्राहम को पहली बार बुलाया, उसने प्रतिज्ञा दी कि वह उसे "एक बड़ी जाति" बनाएगा (12:2)। परमेश्वर का "चुना हुआ" בָּחִיר *(बचीर)*[24] होने के कारण (देखें नेहम्य. 9:7), उसे अपने वंशजों तथा पृथ्वी के सब परिवारों के लिए आशीष का माध्यम होना था (12:2, 3)। बहुत वर्ष बीत जाने के पश्चात, प्रभु ने कहा कि उसके वंशज "पृथ्वी की धूल के किनकों" और "तारागण" के समान असंख्य होंगे (13:16; 15:5)। बहुत वर्ष के पश्चात, जब कुलपति निन्यान्वे वर्ष का था, परमेश्वर ने भविष्यवाणी की कि उसमें से राष्ट्र और राजा उत्पन्न होंगे (17:1, 6)। अन्ततः, प्रभु ने कहा कि सारा "जाति जाति की मूलमाता" होगी और उससे राजा उत्पन्न होंगे (17:15, 16)। यह सब अब्राहम और सारा को असंभव लगा, और वे अविश्वास में हंसे (17:17; 18:10-13); लेकिन अन्ततः उन्होंने जाना कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है (18:14)।

अवश्य ही, यह सत्य है कि, जो राष्ट्र और राजा उनसे उत्पन्न हुए - एदोम और इस्राएल (बाद में उत्तर में इस्राएल और दक्षिण में यहूदा में विभाजित हुए) - अभी सुदूर भविष्य में थे। फिर भी, यह अध्याय उन परमेश्वरीय वायदों के पूरा होने के आरंभिक चरणों को दिखाता है। उत्पत्ति 25:1-4 कहती है कि "तब इब्राहीम ने एक और पत्नी ब्याह ली जिसका नाम कतूरा था," और उससे उसको छः पुत्र उत्पन्न हुए। उन पुत्रों तथा उनके कुछ पुत्रों नाम, लेख में आते हैं। अब्राहम की ये सन्तान अरब कबीलों के सरदार बन गए। हम उनके बारे में बहुत कम जानते हैं, लेकिन इतना ही कि कुलपति के बहुतायत से भावी वंशज होने के वायदे में परमेश्वर विश्वासयोग्य रहा।

इस संबंध में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का एक और उदाहरण हाजिरा से होकर इशमाएल के वंशज हैं (25:12-16)। उससे "बारह प्रधान" उत्पन्न हुए, और वे अन्य बारह अरब कबीलों के सरदार बने, जो याकूब से आने वाले इस्राएल के बारह गोत्रों के समानन्तर था। अब्राहम ने तो अपनी विरासत इसहाक को दी, वह अपनी रखेल पत्नियों के पुत्रों से भी प्रेम करता था और अपने जीते जी उसने उन्हें कुछ कुछ उपहार दिए (25:5, 6)। उसने उन्हें पूर्व की ओर भेजा ताकि वे कनान देश में इसहाक के प्रतिद्वंदी ना बन सकें।

यद्यपि हजिरा और कतूरा के वंशज अब्राहम की इसहाक और याकूब से होकर चुनी हुई वंशावली का भाग नहीं थे,[25] जिन्हें वाचा का देश मिलना था, उनसे प्रेम करने और उनके भविष्य के लिए उन्हें उपहार देने के द्वारा, अब्राहम उनके लिए भी आशीष का कारण बना।

अब्राहम ने अपने पुत्रों के साथ अपना विश्वास बाँटा और उन्हें उनके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा के बारे में शिक्षा दी। एक परिच्छेद कुलपति में प्रभु के भरोसे का इन शब्दों में उल्लेख करता है: "क्योंकि मैं जानता हूं, कि वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उसके पीछे रह जाएंगे आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग

में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय करते रहें, इसलिये कि जो कुछ यहोवा ने इब्राहीम के विषय में कहा है उसे पूरा करें" (18:19)। यद्यपि जो निर्देश अब्राहम ने अपने पुत्रों को दिए उसके बारे में हमारे पास बहुत कम जानकारी है, इसहाक के बलिदान की कहानी से तात्पर्य निकलता है कि कुलपति ने अपने पुत्र को परमेश्वर का ज्ञान दिया था। साथ ही, इससे यह भी पता चलता है कि इसहाक का भी यहोवा में दृढ़ विश्वास विकसित हो गया था, जिस कारण उसने - संभवतः तरुणावस्था में - अपने पिता द्वारा बाँधे जाकर वेदी पर रख दिए जाने का कोई प्रतिरोध नहीं किया (22:1-19)। क्योंकि अब्राहम अपने सभी पुत्रों से प्रेम रखता था और उन्हें उपहार दिए, यह निश्चित लगता है कि उसने उन्हें सबसे महान उपहार भी दिया - "प्रभु के मार्ग" की शिक्षा - जैसा कि परमेश्वर ने 18:19 में कहा था।

शारीरिक रूप से चुना या ना-चुना हुआ होने से किसी की आत्मिक नियति निर्धारित नहीं होती है। अब्राहम के परिवार के प्रत्येक सदस्य के पास चुनने की स्वतंत्रता थी कि वे कुलपति के एकमात्र सच्चे परमेश्वर में विश्वास को थामे रहें या त्याग दें; प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिए निर्णय लेना था कि वह धर्म और न्याय के साथ "प्रभु के मार्ग को रखना" चाहेगा या नहीं। दूसरे शब्दों में, लोग परमेश्वर के चुने हुए आत्मिक जनों ("बचाए" हुओं) के संभागी बन सकते थे, चाहे वे शारीरिक रीति से उसके चुने हुए थे, या नहीं। यही वह बात है जो पौलुस के कहने का अर्थ था जब उसने घोषणा करी, "इसलिये कि जो [शारीरिक] इस्राएल के वंश हैं, वे सब [आत्मिक] इस्राएली नहीं" (रोम. 9:6)। प्रेरित ने जैतून के वृक्ष की समानता का उपयोग करते हुए कहा कि कुछ प्राकृतिक "डालियाँ" (शारीरिक भाव से चुने हुए इस्राएली) अपने "अविश्वास" के कारण "तोड़े दिए गए," जबकि कुछ अन्यजाति (शारीरिक भाव से ना-चुने हुए) वृक्ष में "विश्वास" के द्वारा "साटे" गए और परमेश्वर के चुने हुए लोगों के संभागी हो गए (रोम. 11:17-20)। उसने अन्यजातियों को घमण्डी होने के बारे में भी चेतावनी दी: यदि वे विश्वास में बने नहीं रहे, तो वे भी "काट दिए" जाएंगे जैसा कि अविश्वासी यहूदियों के साथ हुआ। और यही नहीं, यदि अविश्वासी यहूदी विश्वास में आएंगे, तो वे भी अन्यजातियों के समान साटे जाएंगे (रोम. 11:20-24)।

परमेश्वर द्वारा मनमानी और बिना किसी शर्त के इसहाक और याकूब द्वारा अब्राहम के शारीरिक वंशजों के चुनाव से अन्ततः वाचा किए हुए देश में मसीह का जन्म हुआ। इसकी तुलना में, अब्राहम के आत्मिक वंशजों का चुनाव सदा ही सशर्त रहा है; जो विश्वास और परमेश्वर की इच्छा के पालन पर आधारित रहा है (मत्ती 3:1-12; लूका 7:30; गला. 3:26-29)। शारीरिक रीति से ना-चुने हुए व्यक्ति, जैसे कि राहाब, यहोवा के सच्चे विश्वासी बन सके (यहोशू 2:8-14; इब्रा. 11:31) और इसलिए परमेश्वर के चुने हुए आत्मिक लोगों के संभागी हुए।

एक अन्य उदाहरण है, एक मोआबी स्त्री रूत का। शारीरिक भाव से वह ना-चुने हुओं का भाग थी; तो भी वह, अपनी सास, नाओमी के परमेश्वर यहोवा की सच्ची विश्वासी बनी। अपने मोआबी देवाताओं को पीछे छोड़कर, वह आत्मिक रीति से परमेश्वर के चुने हुए इस्राएली राष्ट्र का भाग बनी (रूत 1:16, 17;

4:11-17)। आगे चलकर, वह यीशु मसीह की पुरखिन बन गई (मत्ती 1:5)। जैसे कि यह व्यक्ति परमेश्वर के आत्मिक चुने हुए सन्तान बन गए, इश्माएल के वंशज और कतूरा की सन्तान भी चुनाव कर सकते थे, कि विश्वास के द्वारा, प्रभु का आदर तथा सेवा करेंगे।

इसहाक से होकर चुना हुआ वंश। जैसे कि सारा ने बाँझ होने का दुःख उठाया था, वैसे ही रिबका भी, विवाह के लगभग बीस वर्ष पश्चात भी निःसन्तान थी (25:20, 26)। क्योंकि परमेश्वर के दास ने उसे और इसहाक को एक साथ लाने के लिए परमेश्वर की योजना बताई थी, इसलिए दोनों ही परिवार यह मानते थे कि उनका विवाह परमेश्वर की इच्छानुसार है। तो फिर क्यों रिबका को सन्तान नहीं हुई? इस अन्तर्निहित प्रश्न का लेख में कोई उत्तर नहीं दिया गया है; लेकिन लेख यह बताता है कि इसहाक ने उसके लिए प्रभु से प्रार्थना की, जैसे अब्राहम ने सारा के लिए की थी (15:1-5)। अन्ततः, उसे गर्भ ठहरा (25:21)।

रिबका ने, अपने अन्दर दो अत्यधिक सक्रिय बच्चों के रूप में, माँगने से बढ़कर पाया। उसकी गर्भावस्था बहुत कठिन थी क्योंकि वे जुड़वाँ उसके अन्दर संघर्षरत थे। यह ऐसा था मानो उसके अन्दर युद्ध चल रहा हो (25:22)। उसने प्रभु से पूछा कि उसके अन्दर के इस द्वन्द का क्या महत्व है, और उसका उत्तर था कि वे जुड़वाँ दो विरोधी राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जेठे पुत्र एसाव के वंशज (एदोमी), कनिष्ठ पुत्र, याकूब के वंशजों (इस्त्राएलियों) की सेवा करेंगे (25:23)। इसहाक और रिबका इस भविष्यवाणी के पूरा होने को देखने के लिए जीवित नहीं रहे; यह पूर्ति सदियों के बाद हुई, जब राजा दाऊद ने एदोमियों को अधीन कर लिया (2 शमूएल 8:14)।

बहुतों की मान्यता के विपरित, ना ही वंशानुगत गुण और न ही परिस्थितियों का अनुकूल होना किसी व्यक्ति के रवैये को पूर्णतया निर्धारित करता है। यद्यपि, हमारे बचपन में हमारे अभिभावक हमारे चरित्र को बनाने में सहायक होते हैं, हमारे निर्णय और हमारी अन्तिम नियति हमारे ही हाथों में होती है। हम कैसे जन बनेंगे यह अनेकों बातों द्वारा निर्धारित होता है; लेकिन फिर भी हम क्या होंगे, हम किसके होंगे, और जीवन में कौन सा मार्ग लेंगे, यह चुनाव करने की क्षमता हमारी ही होती है। मुक्त नैतिक व्यक्ति होने के कारण, हम अभिभावकों की आशाओं, वंशागत सीमाओं, और परिस्थितियों के प्रभावों के ऊपर उठ या नीचे गिर सकते हैं। जैसे जैसे हम शारीरिक, बौद्धिक, और आत्मिक बातों में विकसित होते हैं, हम स्वयं निर्णय करते हैं कि हम परमेश्वर के चुने हुओं में रहेंगे अथवा नहीं।

इसका एक अच्छा उदाहरण है राजा शाऊल। उसे जीवन में एक अच्छा आरंभ मिला था। वह ऊँचे कद का था, सुन्दर, और बलवान था। जब वह प्रभु का अभिषिक्त राजा बना तब परमेश्वर का आत्मा उस पर आया था और उसके हृदय को बदल दिया था (1 शमूएल 9:1, 2; 10:1, 9, 10)। लेकिन वह हठी और घमण्डी था, परमेश्वर की इच्छा का प्रतिरोध करता था (1 शमूएल 13:8-14;

15:1-23); और ईर्ष्या से भर गया जब उसने दाऊद की बढ़ती हुई लोकप्रीयता को देखा (1 शमूएल 18:5-12; 19:8-10)। उसके अन्दर की अशांति ने परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता के सतत पतन को उत्पन्न किया जिसका अन्त फिलिस्तियों द्वारा इस्राएल की गिलबो पहाड़ पर पराजय और स्वयं शाऊल की आत्महत्या द्वारा दुखद मृत्यु के साथ हुआ (1 शमूएल 31:1-6)।

तरसुस के शाऊल की कहानी इससे विपरीत है। पारंपरिक विवरणों के अनुसार ना ही वह शारीर से बलवान था और न ही सुन्दर। बाद के जीवन में भी, प्रगट रूप में वह "निर्बल" था (2 कुरि. 10:10; KJV) और अकसर अस्वस्थ (2 कुरि. 12:7-9; गला. 4:13-15)। लेकिन फिर भी, वह यरूशालेम के रब्बियों की पाठशाला का उत्साही शिष्य था, उसे यीशु के नाम से घृणा हो गई थी जिस कारण वह मसीहियों पर, उनके मारे जाने तक का अत्याचार करता था (प्रेरितों 26:9-11; 1 तिमु. 1:13)। प्रांभिक कलीसिया के उन्मूलन के लिए पौलुस की तीव्र इच्छा ने उसे यहूदी धर्म में उच्च स्थान पर पहुँचा दिया था; वह सैनहेड्रिन महासभा में नायब था। प्रधान याजकों ने उसे आज्ञापत्र दिए थे कि वह नासरत के यीशु के अनुयायियों को पकड़ कर कैद करवाए (प्रेरितों 9:1, 2, 14; गला. 1:13, 14)। दमिशक के मार्ग पर जब उसकी मुलाकात पुनर्जीवित हो उठे मसीह से हुई तो वह दुविधा में पड़ गया। जो सत्य अब उसने जान लिया था क्या वह उसे नकार कर मसीहियों का प्रमुख अत्याचारी होने के मार्ग पर चलता रहेगा, या फिर क्या वह पुनर्जीवित हुए प्रभु में विश्वास लाकर उसे अपने जीवन को पूर्ण्या परिवर्तित करने देगा? वह जानता था कि यदि वह यीशु के उद्धारकर्ता होने का समर्थक हो गया तो उसे यहूदियों का शत्रु मान लिया जाएगा (प्रेरितों 26:12-19; रोम. 1:15, 16; 10:9-13); लेकिन हम जानते हैं कि उसने सही निर्णय लिया और यहूदी एवं अन्यजातियों दोनों ही में समान रूप से प्रचार करने वाला परमेश्वर तथा कलीसिया का महान सेवक बन गया।

विडंबना यह थी कि दोनों शाऊल का एक ही नाम था, दोनों एक ही गोत्र से थे, दोनों का एक ही धर्म था। दोनों ही इस्राएल राष्ट्र में उच्च स्थान तक पहुँचे थे, और परमेश्वर के चुने हुए लोग इस्राएल का भाग होने के कारण दोनों ही महान आशीषों के भागी थे। परन्तु दोनों के ही जीवनों का परिणाम बहुत भिन्न था। एक का अन्त परमेश्वर के विरुद्ध दुखद बलवे के साथ हुआ, जबकि दूसरे की मृत्यु जयवन्त जीवित विश्वास के साथ हुई। मनमाने परमेश्वरीय चुनाव का इसमें कोई सरोकार नहीं था। दोनों ही व्यक्ति अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा जानते थे, और दोनों के पास यह स्वतंत्र चुनाव था कि वे अपने आत्मिक जीवनों क्या दिशा देंगे। राजा शाऊल का अपना एक कार्यक्रम था, जिसका पालन उसने अपने विनाश तक किया। जब तरसुस के शाऊल ने जाना कि मसीहियों पर अत्याचार करके वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं कर रहा है, उसने तुरंत परिवर्तित हो गया तथा संसार में आए मसीही विश्वास के महानतम प्रचारकों में से एक बन गया।

याकूब के द्वारा चुना हुआ वंश। यद्यपि एसाव और याकूब दोनों के एक ही

दादा-दादी थे: अब्राहम, विश्वासियों का पिता, और सारा, जो विश्वास द्वारा वृद्धावस्था में गर्भवती हुई (इब्रा. 11:11)। उनके एक ही माता पिता थे: इसहाक, जो प्रतिज्ञा की सन्तान था, और रिबका, जो परमेश्वर द्वारा उनकी माता होने के लिए चुनी गई (24:1-67)। ये दोनों भाई परस्पर - शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक रीति से बहुत भिन्न थे। याकूब, खतरों और संघर्षों से होता हुआ, अन्ततः परमेश्वर का जन बन गया, जबकि एसाव एक ऐसा संपन्न व्यक्ति बन गया (33:1-11) जिसने अन्यजाति हित्ती स्त्रियों से विवाह करके अपने अभिभावकों के जीवन को दुखद बना दिया (26:34; 27:46; 28:8, 9)। जेठे भाई की त्रासदी थी क्योंकि उसके जीवन में परमेश्वर का कोई स्थान नहीं था, उसने अपनी बपौती को ठुकराना चुना। इब्रानियों का लेखक उसे "अधर्मी" कहता है (इब्रा. 12:16)। याकूब, जो छोटा था, वह इस्राएल के बारह गोत्रों का जनक बन गया।

कुछ लोगों का मानना है कि एसाव का अनुशासनहीन रवैया और आत्मिक बातों के लिए लापरवाही परमेश्वर द्वारा पूर्वनिर्धारित थे। वे केवल इन बातों पर ध्यान लगाते हैं जैसा कि उत्पति 25:23 में प्रभु ने कहा "बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा," और पौलुस की टिप्पणी कि परमेश्वर द्वारा याकूब का "चुनाव" और एसाव का त्यागना उनके जन्म या उनके "कुछ भला अथवा बुरा करने" (रोम. 9:11, 12) से पहले निर्धारित हो गया था। इन परिच्छेदों का गलत अर्थ लगाकर यह कहा जाता है कि एसाव के पास ना तो कोई चुनाव था और ना योग्यता कि वह परमेश्वर का जन बन सके और उसकी इच्छा पूरी कर सके क्योंकि वह प्रभु के "चुने" हुओं में से नहीं था।

इन तथ्य को वे नज़रन्दाज़ कर देते हैं कि उत्पत्ति में परमेश्वर के कथन का रिबका के अजन्मे बच्चों के अनन्त उद्धार या विनाश से कोई लेना देना नहीं था। ये बच्चे केवल दो जातियों या राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। परमेश्वर का चुनाव था कि याकूब के वंशज कनान देश को पाएं और वह वंश प्रदान करें जिसमें होकर पृथ्वी के सभी कुल, जगत के उद्धारकर्ता यीशु के आने से आशीषित हों। एसाव के वंशज ना-चुने हुए केवल इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि वे उस परिवार से बाहर थे जिसे परमेश्वर ने अब्राहम से किए गए वायदों का भाग होने के लिए चुना था।

रोमियों 9:11, 12 एसाव या याकूब के व्यक्तिगत रीति से उद्धार का कोई संबंध नहीं दिखाता है; और ना ही इससे अगली आयत, जिसे भी इसी प्रकार संदर्भ से बाहर लिया जाता है, जिससे कि उस तर्क को सहारा प्रदान कर सकें कि परमेश्वर ने बिना शर्त अनन्त ठिकाना निर्धारित कर दिया था जबकि दोनों अभी अपनी माता के गर्भ ही में थे। प्रेरित ने मलाकी 1:2, 3 से परमेश्वर के कथन को उद्धरण किया है: "मैंने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना" (रोम. 9:13)।

सर्वप्रथम, हमें यह समझना चाहिए कि जब प्रेम और घृणा को तुलना में इस प्रकार आमने सामने रखा जाता है, तो अधिकांशतः "घृणा" का अर्थ होता है "कमतर प्रेम," जबकि "प्रेम" का अर्थ होता है "अधिक प्रेम।" उत्पत्ति 29:30-32 इस प्रकार के शब्दुपयोग का उत्तम उदाहरण है। इस कथन की पृष्ठभूमि लाबान द्वारा हारान में अपने नए दामाद के साथ किया गया धोखा है। इससे पहले कि

राहेल उसे पत्नी के रूप में मिलती, याकूब को लिआः से विवाह करने के लिए चकमा दिया गया। लेख कहता है कि "उसकी प्रीति लिआ: से अधिक उसी पर हुई" (29:30)। इसका तात्पर्य है कि याकूब लिआः से "प्रेम" करता तो था, लेकिन उतना नहीं जितना "प्रेम" वह राहेल से करता था। इसके बाद वर्णनकरता ने टिप्पणी की "जब यहोवा ने देखा, कि लिआ: अप्रिय हुई" (29:31)। इब्रानी में "अप्रिय" के लिए शब्द है שְׂנוּאָה *(सेन)*, जिसका शब्दार्थ है "घृणा"; लेकिन प्रकट है कि उसे उसके प्रति कोई बैर या शत्रुता नहीं थी। इसका केवल इतना तात्पर्य है कि याकूब लिआः से राहेल के मुकाबले कम प्रेम करता था। इससे अगली आयत में, जब लिआः ने याकूब को एक पुत्र दिया, उसने कहा, "सो अब मेरा पति मुझ से प्रीति रखेगा" (29:32), जिससे उसका तात्पर्य था कि वह जितना पहले करता था उससे अधिक प्रेम रखेगा।[26]

दूसरी बात, हमें समझना है कि मलाकी 1:2, 3 एसाव और याकूब के बारे में की गई कोई व्यक्तिगत घोषणा नहीं थी। निश्चित है कि, यह उनके अनन्त ठिकाने के बारे में भी नहीं था। वरन, यह एदोमियों पर नबोती अरबों द्वारा लाए गए परमेश्वर के न्याय से संबंधित है, जिन्होंने एसाव के वंशजों को पाँचवीं और चौथी शताबदी ई.पू. में (एसाव और याकूब के समय से 1,300 वर्ष से भी अधिक के बाद) उनकी पैतृक भूमि से खदेड़ दिया था। यह प्रक्रिया लगभग पूरी हो गई थी जब मलाकी ने अपने शब्दों को लेखनी दी, क्योंकि प्रभु ने कहा "एसाव को अप्रिय जान कर उसके पहाड़ों को उजाड़ डाला, और उसकी पैतृक भूमि को जंगल के गीदड़ों का कर दिया है" (मलाकी 1:3)। जब एदोमियों ने स्वीकार कर लिया कि "हमारा देश उजड़ गया है," और प्रण किया कि वे "खण्डहरों को फिर कर बसाएंगे"; तो परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी कि यह निषफल रहेगा क्योंकि वह फिर से उन्हें ढा देगा (मलाकी 1:4)।

जो एकमात्र परिच्छेद जुड़वों के जीवन में आने वाली बातों का पूर्वगामी है वह है उस कथन का जो उनके जन्म के बारे में है, जब छोटा पुत्र (याकूब) पहिलौठे (एसाव) की एड़ी पकड़े हुए आया (25:26)। एड़ी पकड़ने या चालाकी से किसी अन्य का स्थान ले लेने की परिकल्पना, याकूब के उस रवैये तथा चरित्र की भविष्यवाणी थी जब उसने एसाव की भूख का लाभ उठाकर उसे अपना जन्माधिकार एक कटोरे दाल के लिए बेचने को फुसला लिया (25:27-34)। एक और पूर्ति तब दिखाई देती है जब याकूब ने, अपनी माता की सहायता से, धोखे से अपने पिता से आशीष ले ली। यह आशीष सामान्यतः पहिलौठे को दी जाती थी, परन्तु याकूब ने अपने अन्धे पिता को जताया कि वह एसाव है और उसे आशीष दे रहा है (27:1-40)। एक बार फिर उसने चालाकी से अपने भाई का स्थान ले लिया।

धर्मशास्त्र के जो भाग एसाव और याकूब का उल्लेख करते हैं वे मनमानी से उद्धार या विनाश के लिए व्यक्ति का चुना जाना नहीं सिखाते हैं। पुराने नियम में, परमेश्वर ने व्यक्तियों जैसे कि अब्राहम, इसहाक, याकूब, और दाऊद को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चुना (नहेम्य. 9:7; भजन 89:3)। यही बात पुराने

नियम में इस्राएल जैसे समुदायों के लिए भी सत्य है (व्यव. 14:2; 1 इतिहास 16:13; भजन 105:6) और नए नियम में मसीह की देह और कलीसिया, के लिए भी (इफ. 1:3-11; 1 पतरस 1:1, 2; 2:9)। परमेश्वर ने मसीहियों को व्यक्तिगत रीति या मनमानी से जगत की उत्पत्ति से पहले से नहीं चुना; वरन उसने व्यक्तियों के एक समुदाय को चुना (जो मसीह में होंगे, अर्थात, उसकी कलीसिया)। उसने इन लोगों को "समय की भरपूरी" (गला. 4:4, 5) के साथ छुड़ा लेने की योजना बनाई। कोई व्यक्ति इस चुने हुए समुदाय का भाग होगा या नहीं इस बात पर निर्भर है कि वे मसीह का स्वीकार करते हैं या तिरस्कार। इस युग में, हमें आदेश है कि हम सुसमाचार को सुनें और उस पर विश्वास करें, अपने पापों से पश्चाताप करें, परमेश्वर के पुत्र मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करें, और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें (प्रेरितों 2:36-41; देखें मरकुस 16:15, 16; रोम. 6:3-6; इफ. 1:13; कुलु. 2:11-13; 1 पतरस 1:18-23)।

सारी बाइबल में, व्यक्तियों का उद्धार सदा ही विश्वास और आज्ञाकारिता पर निर्भर रहा है। चुने हुओं को परमेश्वरीय चेतावनियाँ दी गई हैं कि यदि वे बलवा करके प्रभु से विमुख हो जाएंगे और पश्चाताप नहीं करेंगे, तो उन्हें परिणाम भुगतने पड़ेंगे: (1) वे काट डाले जाकर आग में झोंके जाएंगे (यहू. 15:1-6); (2) वे स्वधर्मत्याग द्वारा परमेश्वर (इब्रा. 3:12) और मसीह (गल. 5:1-4) से दूर हो जाने के दोषी हो जाएंगे; (3) वे परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश नहीं करने पाएंगे (इब्रा. 4:1-11); और (4) उनकी बुलाहट तथा चुनाव खतरे में पड़ जाएगा (देखें 2 पतरस 1:10; KJV)।

उपसंहार: परमेश्वर की जो आशीषें व्यक्तियों को दे दी गई हैं वे उनके जीवनों और वंशजों पर लागू रह सकती हैं या अभिशाप बन सकती हैं। परिणाम, पाने वाले व्यक्ति के प्रत्युत्तर पर निर्भर करता है। प्रत्येक आत्मिक वरदान मसीह में है (इफ. 1:3), और यह परमेश्वर की योजना में "अनन्त से है" (2 तिमु. 1:9)। हमें मसीह में विश्वसयोग्यता से रहना चाहिए जिससे हम महान आशीषों से लाभान्वित हो सकें।

आत्मिक सहनशक्ति (25:19-26)

सारे इतिहास में, परमेश्वर के लोग, जब कठिन परीक्षाओं में पड़े हैं, तो उन्होंने माँगा है, "क्यों?" लेकिन अधिकांशतः, आकाश मौन रहे हैं, और कोई उत्तर नहीं आया है। संभव है कि सताव के समयों में प्रभु से विश्वासी लोगों को "क्यों" समान प्रश्नों के उत्तर नहीं, वरन "कैसे" कठिन परिस्थितियों का प्रत्युत्तर उन्हें कैसे देना है समझ पाने के लिए बुद्धिमता की आवश्यकता होती है (याकूब 1:5)। संभवतः निम्न प्रश्न अधिक उचित होंगे: "प्रभु, आप क्या चाहते हैं कि मैं इससे सीखूँ?"; "यह मुझे और अधिक अच्छा व्यक्ति कैसे बना सकता है?"; "इस अनुभव को मैं आपकी महिमा के लिए कैसे उपयोग कर सकता हूँ?"

यह सब कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि यदि हम सही प्रश्न पूछेंगे तो हमें प्रभु से सुने जा सकने वाले उत्तर मिलने पाएंगे; लेकिन यह अवश्य ही हमें अधिक

अच्छा रवैया रखने और इन परेशानियों का सामना कर सकने की सामर्थ के मार्ग पर ले जाएंगे। परीक्षाएं हमें बरबाद कर सकती हैं यदि हम उनके कारण स्वयं पर दया करने की कीचड़ में लोटने लगेंगे या परमेश्वर के प्रति कटु हो जाएंगे, लेकिन वे हमारे अन्दर दृढ़ता (सहनशक्ति) उत्पन्न करेंगी यदि हम उनका सामना सही रीति से करेंगे। जैसे यीशु के भाई याकूब ने कहा, "हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जान कर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है" (याकूब 1:2, 3)।

परमेश्वर हमारे विश्वास को परखने के लिए परीक्षाओं को आने देता है, और ऐसा करने में उसकी इच्छा है कि हम अपनी आत्मिक माँसपेशियाँ ("सहनशक्ति") विकसित करें। यह उस विचार से सर्वथा मेल खाता है जिसे भारोत्तोलक खिलाड़ी भली भांति समझते हैं, और उनके पास इसके लिए उचित वाक्यांश है: "बिना कष्ट उठाए कोई लाभ नहीं मिलता!" इसलिए, बलवान माँसपेशियों को विकसित करने के लिए, व्यक्ति को प्रतिरोध चाहिए, कुछ ऐसा जिसके विरुद्ध वह कार्य कर सके, और जिसमें कष्ट होता है।

यही सिद्धांत आत्मिक माँसपेशियों को विकसित करने में भी लागू होता है। इसीलिए प्रभु ने अपने चेलों से कहा था कि उन्हें दुःखदायी परीक्षाएं झेलनी पड़ेंगी: अपने ही परिवार और मित्र जनों से तिरस्कार, घृणा, सताव और अपने शत्रुओं के हाथों मृत्यु भी, परन्तु उसने कहा, "पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का अवसर हो जाएगा" (लूका 21:13)। दूसरे शब्दों में, प्रभु के रक्षक कवच एवं "आत्मा की तलवार" और "विश्वास की ढाल" (इफ. 6:16, 17) के प्रयोग के द्वारा, परीक्षाएं तथा सताव हमें बलवन्त होने का अवसर प्रदान करेंगे। इस प्रकार, प्रभु में भरोसा रखने तथा उसके आत्मिक कवच और हथियारों के सही प्रयोग के द्वारा, हम ऐसी आत्मिक माँसपेशियाँ विकसित कर सकते हैं जो बैर था सताव को जीवन जीने की "गवाही" में, और यदि आवश्यकता पड़ी तो, यीशु के समान कैसे मरें में परिवृतित कर सकती हैं। इसके दो शक्तिशाली उदाहरण हैं (1) स्तिफनुस की गवाही और प्रार्थना, जब उस पर पथराव हो रहा था (प्रेरितों 7:57-60), तथा (2) पौलुस और सिलास द्वारा फिलिप्पी में अन्यायपूर्ण रीति से पीटे जाने और बन्दीगृह में डाले जाने के पश्चात स्तुति के गीत गाना (प्रेरितों 16:19-34)।

रिबका की घटना में, बाहर से आने वाली किसी प्रतिरोध ने उसे परेशान नहीं किया था; वरन, वह अपने अन्दर चलने वाले द्वन्द्व से दुःखी थी, अर्थात उसका गर्भवती हो पाने के लिए अपर्याप्त एवं असमर्थ होना। संभवतः उसे अपने भावी पति से मिलने के लिए कनान देश को कूच करते समय अपने परिवार से मिली आशीष स्मरण आती होगी: "हे हमारी बहिन, तू हज़ारों लाखों की आदिमाता हो, और तेरा वंश अपने बैरियों के नगरों का अधिकारी हो" (24:60)। फिर भी, विवाह के बीस वर्ष के बाद भी रिबका बाँझ थी, और उसे लगा होगा कि प्रभु उसके साथ कोई क्रूर दैवीय मज़ाक कर रहा है। क्या उसके अहंकार या भय ने उसे अपने बाँझ होने के विषय में परमेश्वर के पास प्रार्थना में नहीं आने

दिया? क्या इस विषय को लेकर उसने स्वयं अपने बारे में कभी प्रार्थना नहीं की? क्या यह संभव है कि अपने पति इसहाक से अपनी इस निराशाजनक स्थिति के बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करने को कहने में उसे लज्जा आती थी? लेख इन प्रश्नों का कोई उत्तर प्रदान नहीं करता है। स्थिति चाहे जो भी रही हो, अपने संदेह और भय के बावजूद, अन्ततः रिबका अपने पति की प्रार्थना के द्वारा अपनी देखभाल प्रभु पर डाल देती है (1 पतरस 5:7), और परमेश्वर सकारात्मक रीति से उसका उत्तर देता है, जिससे वह गर्भवती होकर जुड़वां बच्चों को जन्म दे सकी।

समाप्ति नोट्स

[1]अय्यूब को "पूरवियों में वह सब से बड़ा था" (अय्यूब 1:3) कहा गया, जो यह बताता है कि वह और उसके मित्र कनान के पूर्व में रहते थे, सम्भवतः अरब के पश्चिमी किनारों पर। [2]बहुवचन से समापन का प्रयोग जो कि जाति के बजाए व्यक्तिगत होने का संकेत करता हे, वह जाति की सूची में भी प्रकट होता है (10:4, 13, 14)। [3]गोरडन जे. वेनहेम, *जेनेसिस 16-50*, वर्ड बिबलिकल कमैंट्री, वाल. 2 (डलासः वर्ड बुक्स, 1994), 159. [4]*हम्मुरबी का नियम* 171. [5]उसी प्रकार, याकूब और एसाव अपने पिता इसहाक को दफनाने के लिए मिले (35:29)। [6]यह संभव है कि महलत और बासमत एक ही स्त्री को दिखाते हैं (देखिए 36:2, 3 पर टिप्पणी)। [7]मार्क जे. फ्रेट्ज़, "अद्बेल," *द ऐन्कर बाइबल डिक्शनरी*, एड. डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1992), 1:70 में। [8]इब्रानी लेख में "दूमा" है; किंतु NASB ग्रीक लेख का अनुसरण करती है और "एदोम," जो कि अगली पंक्ति में "सेर" के अनुरूप है (देखें यशा. 21:11, 12; LXX)। [9]विकटर पी. हैमिलटन, *द बुक ऑफ़ जेनिसिस: चैप्टर्स 18-50*, द न्यू इन्टरनैशनल कमेन्ट्री औन द ओल्ड टेस्टामेन्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग कंपनी., 1995), 172. [10]ए. लियो ओप्पेन्हाइम, ट्रांस., इन "बैबिलोनियन एन्ड एस्सीरियन हिज़्टोरिकल टेक्सट्स," *ऐंशियन्ट नियर ईस्टर्न टेक्सट्स रिलेटिंग टू द ओल्ड टेस्टामेन्ट*, 3ड., एड., जेम्स बी. प्रिट्चर्ड (प्रिंस्टन, एन.जे.: प्रिंस्टन यूनिवर्स्टी प्रेस, 1969), 283-84.

[11]लुडविग कोह्लर और वॉल्टर बॉमगार्टनर, *द हीब्रू एन्ड एरैमिक लेक्सिकॉन औफ़ द ओल्ड टेस्टामेन्ट*, स्टडी एड., ट्रान्स. एन्ड एड. एम. ई, जे. रिचर्डसन (बॉस्टन: ब्रिल, 2001), 1:374. [12]मिश्नाह *अबोथ* 5.21; तलमूड *सैनहैड्रिन* 76ब। [13]आर. एलबर्ट्ज़, "עתר," इन *थियोलोजिकल लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट*, ट्रांस. मार्क ई. बिड्डुल, एड. अर्नस्ट जेन्नी एन्ड क्लॉस वैस्टरमैन (पीबॉडी, मैस्स.: हैन्ड्रिकसन पबलिशर्स, 1997), 2:962. [14]विलियम व्हाईट, "רָצִין," *TWOT* में, 2:860. [15]उत्पत्ति के कालानुक्रम के अनुसार, अब्राहम कम से कम अस्सी वर्ष का था जब वह मलिकिसिदक से मिला (देखें 12:4; 14:18-20; 16:3)। इसके लगभग बीस वर्ष के पश्चात इसहाक का जन्म हुआ (21:5); और इसहाक साठ वर्ष का था जब रिबका ने याकूब और एसाव को जन्म दिया (25:26)। इसका तात्पर्य है कि मलिकिसिदेक के शालेम (यरुशालेम; भजन 76:2) के राजा/याजक होने के उल्लेख से लगभग अस्सी वर्ष बीत चुके थे। इसका कि, वह अभी भी जीवित था या नहीं या उसके कोई पुत्र था जो "परमेश्वर सबसे महान" के लिए उसकी सेवकाई को ज़ारी रखे हुए था, केवल अन्दाज़ा ही लगाया जा सकता है। [16]देखें लियोनार्ड जे. कोप्प्स, "אָרְמוֹנִי," *TWOT* में, 1:11-12. [17]इबिद. [18]जॉन टी. विलिस, *उत्पत्ति*, द लिविंग वर्ड कॉमेन्ट्री (ऑस्टिन, टेक्स.: स्वीट पबलिशिंग को., 1979), 318-19. [19]एसाव का वर्णन "अशुद्धिकृत पशु" कहके किया गया है (केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनिसिस 11:27-50:26*, द न्यू अमेरिकन कॉमेन्ट्री, वोल. 1बी [नैश्विले: ब्रॉडमैन & होलमैन पबलिशर्स, 2005], 391)। [20]याकूब का चरित्र चित्रण "अधिक सभ्य आदमी"

कहकर किया गया है (के. कॉक, "תמם," इन *थियोलोजिकल लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेन्ट*, 3:1427)।

[21]थियोफ़ाईल जे. मीक, ट्रान्स., "मेसोपोतमियन लीगल दॉक्यूमेनट्स," इन *एन्शियन्ट नियर ईस्टर्न टेक्सट्स*, 219-20. [22]हैमिलटन, 184. [23]ब्रूस के. वाल्टके, "בָּחַר," *TWOT* में, 1:98. [24]दोनों ही, इब्रानी शब्द בָּחִיר *(बखीर)* और उसका युनानी अनुरूप ἐκλεκτός *(एक्लेकटॉस)*, "चुने हुए" व्यक्ति या राष्ट्र को दिखाते हैं। (जॉन एन. ओस्वॉल्ट, "בָּחִיר," *TWOT* में, 1:100-1; और वॉल्टर बौअर, *अ ग्रीक-इंगलिश लेक्सिकॉन ओफ़ द न्यू टेस्टामेन्ट एन्ड अदर अर्ली क्रिस्चियन लिट्रेचर*, 3ड एड., रेव. एन्ड एड. फ़्रेड्रिक विलियम डैंकर [शिकागो: यूनिवर्स्टी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000], 306.) [25]सामूहिक रूप से उन्हें परमेश्वर द्वारा चुने हुए "बापदादों" कहा गया है (देखें प्रेरितों 13:17)। [26]ऐसे ही "प्रेम" और "घृणा" के शब्दुपयोग तुलनात्मक मत्ती 10:37 और लूका 14:26 में देखे जाते हैं।